माननीय राज्यपाल हरियाणा प्रो0 कप्तान सिंह सोलंकी द्वारा 20 दिसम्बर, 2015 को कुरूक्षेत्र में गीता जन चेतना महायज्ञ के अवसर पर दिया गया भाषण।

स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी महाराज, स्वामी धर्मवीर जी, मंच पर बहुत बड़ी संख्या में उपस्थित पूज्य संन्यासीवृन्द, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रचारक श्री नरेश जी, हरियाणा सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री श्री कृष्ण कुमार बेदी जी, विभिन्न विश्वविद्यालयों व महाविद्यालयों से आए प्राध्यापकगण, कुलपति महानुभाव तथा बहुत बड़ी संख्या में इस अवसर पर यज्ञ में सम्मिलित होने वाले भक्तगण, प्रशासनिक अधिकारीगण और पत्रकार बंधुओ!

यज्ञ अपने आप में आत्मशोधन की प्रक्रिया है। इसे करने से वातावरण शुद्ध होता है, हमारा शरीर हृष्ट–पुष्ट होता है, मन भटकता नहीं है, नैतिक मार्ग पर आता है। इसलिए मन का भी शुद्धिकरण होता है। इससे बुद्धि प्रखर होती है और आपका अंतःकरण विशाल हो जाता है। इसलिए शरीर को ठीक करने वाला, मन को व्यवस्थित और संयमित करने वाला, बुद्धि को प्रखरता की ओर ले जाने वाला और आपके अंतःकरण को विशाल बनाने वाला यह यज्ञ भारतवर्ष की जीवन–पद्धति का अंग है। आज के इस अवसर पर स्वामी धर्मदेव जी जो बोले हैं और इसके पश्चात मान्यवर इन्द्रेश जी ने जो बातें कही हैं ये हम सबके लिए मार्गदर्शक हैं और मेरे लिए और हरियाणा सरकार के लिए भी पथनिर्देशक हैं।

पूरे देश में, सब राज्यों में हरियाणा वैसे ही बहुत अच्छे कदम उठा रहा है। यहाँ पर जो बातें सुझाई गई हैं उनकी ओर अगर हम अग्रसर होते हैं तो जो सम्मान कुरूक्षेत्र को प्राप्त है, कुरूक्षेत्र आध्यात्मिकता का केंद्र है, यह विश्व ध्यान का केंद्र है और इसको ध्यान में रखकर अगर ये सब बातें की जाती हैं तो हरियाणा राज्य भी संपूर्ण देश के अंदर एक मार्गदर्शक राज्य बन जाएगा। मैं नमन करता हूँ वैदिक ज्ञान अनुसंधान संस्थान को जो 26 वर्षों से कार्यरत है और अब तक बहुत बड़ी मात्रा में 40–42 इस तरह के यज्ञ करा चुका है। आज मुझे भी सौभाग्य प्राप्त हुआ और पूरे समय इस यज्ञ में रहकर मैंने भी मन में बहुत कुछ अच्छे भाव संजोए।

कुछ माँगें यहाँ पर रखी गई हैं उनको पूरा करना हमारा कर्त्तव्य है। वैदिक ज्ञान अनुसंधान संस्थान की ओर से कहा गया कि उनकी अपनी गतिविधि को एक स्थूल रूप देने के लिए जमीन चाहिए। आप इसके लिए विधिवत आवेदन कीजिए। क्योंकि हर चीज को करने के लिए एक प्रोसेस होता है। उस प्रोसेस में से निकलना पड़ता है। आप जिस तरह का काम कर रहे हैं उस काम को करने के लिए जो भी आवश्यकता होगी उसे पूरा करना हम अपना सौभाग्य एवं कर्त्तव्य समझेंगे। वैसे यहाँ कुरूक्षेत्र विकास बोर्ड़ की तरफ से कई प्रकल्प शुरू हो रहे हैं। पहले भी कई प्रकल्प शुरू हुए हैं। कुछ सक्रिय अवस्था में नहीं हैं। हम उन्हें सक्रिय देखना चाहते हैं। अभी–अभी कुछ महीने पहले हमने 'जीओ गीता' के लिए जमीन दी है। वह संस्था गीता की विश्व में मान्यता देने के लिए एक बहुत बडा केन्द्र, जिसमें विश्व का कोई भी व्यक्ति आकर उसके सभी आयामों को देख

सकेगा, सब प्रकार की जानकारी ले सकेगा, इस प्रकार का केन्द्र यहाँ पर प्रारंभ करने वाली है। 4 मार्च को उसका भूमिपूजन होगा। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के पूजनीय सरसंचालक जी से हम अनुग्रह करेगें एवं मान्यवर प्रधानमंत्री जी से भी आग्रह करेगें कि वे इसका शुभारंभ करें। इसके लिए कुरूक्षेत्र विकास बोर्ड ने 6 एकड़ जमीन दी है। जमीन हमारे पास काफी है परंतु जो आवश्यकताएँ हैं उसके अनुसार कम ही है। लेकिन फिर भी वरीयता के आधार पर हम आपके लिए विचार करेगें।

मान्यवर इन्द्रेश जी ने जो कुछ कहा है वे हमारे लिए मार्गदर्शक सिद्धांत हैं। वे अगर हम पूरा करते हैं तो एक नई पहचान हरियाणा को मिलेगी। वैसे भी हरियाणा प्रदेश आध्यात्मिक दृष्टि से बहुत ही स्थापित, प्रख्यात और माना हुआ प्रदेश है। हम जिस यज्ञ को प्रारंभ कर रहे हैं सबसे पहले अपने देश में यह यज्ञ ब्रह्मा जी ने किया था। सृष्टि की रचना करने के बाद जब ब्रह्म जी ने यज्ञ शुरू किया, अभी हमारे संचालक महोदय बता रहे थे और कितनी बड़ी कालगणना वे बता रहे थे, तब से लेकर यज्ञ की परम्परा चल रही है। तो सबसे ब्रह्म जी ने पृथ्वी पर यज्ञ किया, यज्ञ की वेदी की रचना की, तो यहीं कुरूक्षेत्र में की। तबसे यज्ञ की परंपरा चल रही है। यह भी हम सबको मालूम है कि गीता का ज्ञान यहीं पर दिया गया। जितने हमारे देश में मान्य महर्षि हुए हैं, चाहे वे वेदव्यास हों, चाहे फिर प्रभु दुर्वासा हों, चाहे प्रभु जमदग्नि हों, चाहे वे भृगु ऋषि जी हों, सभी के आश्रम यहाँ पर हुए हैं। यह इतनी पावन धरती है और इतना सुंदर प्रदेश है। सरस्वती नदी का प्रवाह, उसके किनारे पर बैठकर वेदमंत्रों का उच्चारण, सिंधु घाटी की सभ्यता जो प्रखर पर पहुँची, इन सारी चीजों के जो प्रारंभ के स्थान हैं तो वे हरियाणा में हैं। हम इस चीज को जानें और संपूर्ण प्रयास से अगर 21वीं शताब्दी में भारतवर्ष को, पूरे विश्व को शांति का संदेश देने वाला देश बनाना है, जो हम सबका लक्ष्य है, हमारी सरकार का भी लक्ष्य है, केन्द्र सरकार का भी लक्ष्य है तो हम सबको इन सारी चीजों का पुनर्जागरण करने की आवश्यकता है।

आप सबने इतनी बड़ी संख्या में यज्ञ में भाग लिया है, मैं आप सबको शुभकामनाएँ देता हूँ। स्वामी धर्मदेव जी ने अपनी दुर्भावनाओं को छोड़ने का जो विचार हमको दिया है वह अत्यंत अनुकरणीय है। हम उसका ध्यान करें, धारण करें, इस पर आगे बढ़ें।

बहुत–बहुत धन्यवाद!